आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन में समता की अवधारणा : गांधी एवं अम्बेडकर दृष्टियों का तुलनात्मक अध्ययन

Concept of Equality in Modern Indian Political Thought : A Comparative Study of Gandhi and Ambedkar's Perspectives

A SYNOPSIS SUBMITTED TO M.D.S. UNIVERSITY AJMER

FOR DOCTOR OF PHILOSOPHY (FACULTY OF SOCIAL SCIENCES)

By

ALKA MANTRI

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY AJMER

2016

Under the Supervision of :

Dr. Alok Kumar Srivastava

P.G. Deptt. of Political Science,

Samarat Prithvi Raj Chauhan Govt. College, Ajmer (Raj.)

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Appendix-VI

Certificate by Supervisor

Certified that :

1. I am willing to guide the research of Alka Mantri ..... on the above subject if she registered for Ph.D.
2. To the best of my knowledge, the subject selected has not been studied and is not being studied so far in any University.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two year.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline and bibliography, etc. submitted by the candidate.
5. Necessary facilities are available in the department for the above research work, (certificate from principal/head university department with regards to facilities available is enclosed.)
6. I have .....05..... Research candidate registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application being forwarded for registration is .....05.....
7. The candidate is not in a close relation (the term of close relation is defined in the examination ordinance of the University).

9.9.2016

Signature of the supervisor with date

Alok Kumar Srivastava
Lecturer (Political Science)
S.P.C. Government College,
AJMER (Raj.)

CERTIFICATE

Certified that the available facilities will be extended to Alka Mantri for research work if he registered for Ph.D.

उपाचार्य
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

Signature of the Principal/

Director of the Institution

with date

Lecturer 9.9.2016
Samrat Prithviraj Chauhan
Govt. College, Ajmer

Signature of the Head

Department with date

CERTIFICATE

This is to certify that Mr./Mrs. ALKA MANTRI

Son/Daughter of Mr. Girdhari Lal Mantri has qualified/~~not qualified~~ the Course Work of Paper-II & III for Registration for the Ph.D. programme in the Department of Political Science of the SPC. Govt. College, Ajmer (name of the College / University) on 28.5.2016 (date/month/year).

3 उ पर धायाँ
9-5-2016

Signature with date

Govt. College, Ajmer

Head of the Department

APPENDIX-VI-A

MAHARSHI DAYANAND SARSWATI UNIVERSITY, AJMER

FORMAT FOR OUTLINE (SYNOPSIS) OF PROPOSED RESEARCH WORK

1. Name of Scholar (in English) : **ALKA MANTRI**
   (in Hindi) : **अल्का मंत्री**

2. Title of Research Work :

   (inEnglish): **Concept of Equality in Modern Indian Political Thought: A Comparative Study of Gandhi and Ambedkar's Perspectives**

   (in Hindi) : **आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन में समता की अवधारणा : गांधी एवं अम्बेडकर दृष्टियों का तुलनात्मक अध्ययन**

3. Location **(स्थिति)**

   (i) **विभाग व संस्था - विभाग - राजनीति विज्ञान**

   सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

   (ii) **जाँच का भोगोलिक क्षैत्र - लागू नहीं** (N.A.)

4. Introduction and importance of proposed investigation objective etc.

   As per APPENDIX –I

5. Review of work already done on the subject of proposed Research

   Study : As per APPENDIX –II

6. Research Gaps indentified in proposed filed of investigation :

   As per APPENDIX –III

7. Major Hypothesis (if any) : As per APPENDIX –IV

8. Research Methodology : As per APPENDIX –IV

9. Chapter wise detail of proposed research work : As per APPENDIX –IV

10. List of reference cited – Bibliography

8.9.2016
Name and signature of supervisor
with seal and date
Alok Kumar Srivastava
Lecturer (Political Science)
S.P.C. Government College,
AJMER (Raj.)

Alka 8-9-2016
Signature of the
Candidate with date

APPENDIX-I

प्रस्तावित शोध कार्य का परिचय, उद्देश्य एवं महत्व (Proposed Research Work – Introduction, Objects & Importance) :-

भारतीय राजनीतिक चिन्तन में समानता का अपना विशिष्ट महत्व है। इसकी विशिष्टता वस्तुतः प्राचीनता, मौलिकता, निरन्तरता और आधुनिक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता में निहित है। भारत में चिन्तन का क्रम कभी विच्छिन्न नहीं हुआ है। ऋग्वेद काल से वर्तमान काल तक चिन्तन की अविरल धारा प्रवाहमान रही है। काल विभाजन की दृष्टि से 18 वी शताब्दी से वर्तमान तक का भारतीय सामाजिक एवं राजनैतिक चिन्तन 'आधुनिक' कहा जाता है।

आधुनिक भारतीय राजनैतिक चिन्तन में समानता के विचार का जन्म समाज एवं धर्म सुधार आंदोलनों से हुआ है, पाश्चात्य विचारधारा एवं विदेशी शासन ने भारतीय चिन्तन तथा संस्कृति की उपादेयता के सम्बन्ध में जो चुनौती प्रस्तुत की, उसकी एक विशेष प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई।

राजा राम मोहन राय (1772-1833) में सर्वप्रथम इस प्रतिक्रियात्मक परिवर्तन के संकेत मिलते है। उनके द्वारा स्थापित बह्म समाज (1828) इसी प्रतिक्रिया का परिणाम था। उन्होंने मध्य युगीन अंध विश्वासों और उनसे जुड़ी हुई कुरीतियों पर प्रहार करके भारत को आधुनिक बनाने की राह दिखाई। उनका मानना था कि व्यक्ति की स्वतंत्रता का अर्थ केवल यह नहीं कि देश को विदेशी शासन से मुक्ति प्राप्त हो। यदि समाज के भीतर अन्याय की जड़े गहरी जमी हो तो स्वाधीन देश में भी व्यक्ति की स्वतन्त्रता निरर्थक हो जाती है। ऐसे देश को राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्त करने से पहले समाज सुधार का कार्य हाथ में लेना चाहिए।

इसके पश्चात स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824-1883) ने हिन्दू समाज को जड़ीभूत प्रथाओं और अन्ध विश्वासों के बंधन से मुक्त कराने और उसके प्राचीन गौरव के पुनरूत्थान के लिए आर्य समाज (1875) की स्थापना की। हांलाकि परम्परागत आर्य प्रथाओं और वैदिक धर्म के समर्थक होने के नाते स्वामी दयानंद वर्णाश्रम धर्म को मान्यता देते थे लेकिन उनका तर्क था कि वैदिक युग में प्रचलित वर्ण व्यवस्था का आधार जन्म पर नहीं, वरन श्रम विभाजन पर आधारित था, इसलिए स्वामी जी ने वर्ण व्यवस्था को तर्क संगत रूप देने का सुझाव रखकर

जातीय गतिशीलता का समर्थन करते हुए जड़ीभूत हिन्दु समाज को एक क्रांतिकारी संदेश दिया। साथ ही जाति प्रथा की एक और विकृति अस्पृश्यता की प्रथा पर भी तीखा प्रहार किया।

स्वामी विवेकानंद (1863-1902) ने हालांकि राष्ट्र के पुनरूत्थान का दायित्व हिन्दु धर्म को सौपा, फिर भी उनका विश्वास था कि जांत-पात, आस्था-धर्म इत्यादि के पीछे जिस 'मनुष्य' का अस्तित्व पाया जाता है, वह किसी तरह के भेदभाव को स्वीकार नहीं करता इस तरह उन्होंने सच्चे मानववाद और विश्वबंधुत्व के आदर्शो को बढ़ावा दिया। इन विचारको पर पाश्चात्य समाज का प्रभाव पड़ना भी स्वाभाविक था क्योंकि बदलते विश्व परिदृश्य में भारत के अनेक समाज सुधारकों ने पाश्चात्य ज्ञान का संचय किया था। पश्चिमी समाज में वैयक्तिता को समाज में सम्मान प्राप्त था अर्थात् व्यक्ति के व्यक्तिगत गुणों की वजह से उन्हें समाज में उच्च स्थिति प्राप्त थी उसकी सामाजिक स्थिति की वजह से नहीं।

जबकि भारतीय समाज में पदसोपानीयता को प्राथमिकता प्राप्त थी, व्यक्ति के व्यक्तिगत गुण की श्रेष्ठता के स्थान उसकी सामाजिक स्थिति पर उसका अस्तीत्व निर्भर था। भारतीय सामाजिक सुधारकों ने पश्चिमी समाज में वैयक्तिता के महत्व को देखकर भारत में भी यही स्थिति विभिन्न आंदोलनों के माध्यम से लागू करने की कोशिश की।

1885 में भारत में भारतीय राष्ट्रीय क्रांगेस की स्थापना के साथ ही यह बात सामने आने लगी कि भारत में धार्मिक एवं सामाजिक सुधारों को तब तक मूर्त रूप नहीं दिया जा सकता है, जब तक कि समाज एवं देश राजनैतिक रूप से उपनिवेशवाद के चंगुल से मुक्त न हो जाए। गांधी जी के द्वारा अपने विचारों के माध्यम से समाज एवं राज्य में समता की स्थापना के प्रयास किए गए। गांधी जी ने अनेक सामाजिक कुरीतियों जैसे - मद्यपान, स्त्रीयों की समाज में हीन स्थिति, अशिक्षा, अत्याचारी पुरूष वर्ग की प्रधानता आदि को जड़ से समाप्त करने का प्रयास किया। सामाजिक समता स्थापित करने के लिए उन्होंने आधुनिक भारतीय सामाजिक चिन्तन में दलित एवं पिछड़ी जातियों को अन्य भारतीय जन के समान गौरव एवं सम्मान दिलाने का प्रयास किया।

धर्म एवं राजनीति का समुचित संमिश्रण, साधन एवं साध्य का सम्यक संबंध, पूंजीवाद का न्यासकारिता के सिद्धान्त द्वारा शमन, सत्ता का विकेन्द्रीकरण, ग्राम स्वराज आदि विचारों से

गांधी के विचारों को विश्वसनीयता प्राप्त हुई। सामाजिक समता को व्यावहारिक तौर पर लागू करने के लिए गांधी जी ने रचनात्मक सामाजिक कार्यक्रमों के माध्यम से स्त्रीयों की स्थिति को सुधारने का प्रयत्न किया। उनके सत्याग्रह आंदोलनों में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार में स्त्रीयों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वास्तविक तौर पर गांधी जी ने स्त्रीयों को उच्च दर्जा प्रदान करने हेतु लैंगिक समाता पर बहुत बल दिया। उन्होंने न केवल सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया अपितु कही स्थानों पर स्त्रीयों को पुरूषों से श्रेष्ठ भी साबित किया। गांधी जी वर्ण व्यवस्था के पक्ष में थे लेकिन गांधी जी वर्ण व्यवस्था का तात्पर्य - समाज में व्यवस्था से चाहते थे। वे यह बात जानते थे कि भारत में वर्ण व्यवस्था प्राचीन काल से चली आ रही है, अतः उसे समाप्त नहीं किया जा सकता है क्योंकि उसे समाप्त करने का तात्पर्य है कि समाज की पूरी व्यवस्था को हिला देना। इसलिए उन्होंने वर्ण व्यवस्था को बनाए रखते हुए उसमें प्रचलित बुराईयों को दूर करने की पूरी कोशिश की। वर्णो से उनका तात्पर्य था कि समाज में विद्यमान प्रत्येक वर्ण अपने कार्यो का इमानदारी से पालन करे तो समाज में प्रचलित अनेक बुराईयाँ स्वतः ही समाप्त हो जाएगी।

गांधी जी के विचारों का समाज के सभी वर्णो पर गहरा प्रभाव पड़ा। गांधी जी के विचारों में समानता का तात्पर्य राजनैतिक समानता से था - 'एक व्यक्ति एक वोट की धारणा' को उन्होंने महत्व दिया। भारत में गांधी जी के विचारों से लोकतंत्र की स्थापना की और कदम तेज हुए। समाज के सभी वर्गो को मत देने का अधिकार मिलने लगा।

1909 के भारतीय शासन अधिनियम के माध्यम से मुस्लिम संप्रदाय को पृथक प्रतिनिधित्व प्राप्त हुआ। 1919 के भारतीय शासन अधिनियम के द्वारा समाज के अन्य सम्प्रदायों को भी पृथक प्रतिनिधित्व प्राप्त हो गया। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने हिन्दु वर्ण व्यवस्था का विस्तृत विश्लेषण करने के बाद छुआछूत या अस्पृश्यता की प्रथा में निहित अन्यायपर प्रकाश डाला। उन्होंने यह अनुभव किया कि उच्च जातियों के कुछ संत महात्मा और समाज सुधारको के द्वारा दलित वर्गो के प्रति सहानुभूति पूर्ण दृष्टिकोण रखा गया और उनकी समानता पर भी बल दिया गया लेकिन उनके द्वारा इस दिशा में कोई ठोस प्रयास नहीं किया गया।

अम्बेडकर ने यह विचार रखा कि तथाकथित अछूत ही अछूतों को नेतृत्व प्रदान कर सकते है। दूसरे शब्दों में डॉ. अम्बेडकर दलित वर्गों के आत्म सुधार में विश्वास करते थे। डॉ. अम्बेडकर ने शासन की संस्थाओं में दलित वर्गों के उचित और पर्याप्त प्रतिनिधित्व पर बल देते हुए यह विश्वास व्यक्त किया कि इससे दलित वर्गों को कानूनी तरीको से शिकायत निवारण का अधिकार मिलेगा। उन्होंने दलित जातियों को अपने अधिकारों के लिए न्यायालयों का सहारा लेने की भी प्रेरणा दी।

उन्होंने हिन्दू धर्म के भीतर सवर्ण हिन्दुओं और निम्न जातियों के बीच समता का आंदोलन चलाया जिसमें मिल-जुलकर पूजा पर्व मनाना और सम्मिलित प्रीतिभोज शामिल थे। हांलाकि गांधी जी का भी मुख्य उद्देश्य दलितों की स्थिति को सुधारना ही था लेकिन गांधी एवं अम्बेडकर के मध्य दलितों की स्थिति को लेकर गंभीर मतभेद विद्यमान थे।

1932 में पारित 'पूना पैक्ट' साम्प्रदायिक पंचाट को लेकर दोनों के मध्य विद्यमान मतभेद और अधिक गहरे हो गए। गांधी जी दलितों को हिन्दुओं से अलग नहीं करना चाहते थे लेकिन अम्बेडकर इससे सहमत नहीं थे। महात्मा गांधी का विचार था कि सवर्ण हिन्दुओं का हृदय परिवर्तन करके छुआछुत की प्रथा मिटाई जा सकती है और उन्हें विश्वास था कि ऐसा जल्दी ही होगा। जबकि डॉ. अम्बेडकर का मत था कि दलित जातियों का उद्धार तब होगा जब उनके अधिकारो की रक्षा और शिकायतों के निवारण की कानूनी व्यवस्था कर दी जायेगी और इसके साथ ही राजनैतिक सत्ता भी उनके हाथों में आ जायेगी।

सामाजिक एवं आर्थिक समता की स्थापना के लिए डॉ. अम्बेडकर ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि वर्ण व्यवस्था में व्यवसाय का निर्धारण कर्म एवं क्षमता के आधार पर नहीं होता, बल्कि जन्म के आधार पर होता है, जो व्यावसायिक एवं औद्योगिक प्रगति और कार्य कुशलता के लिए हानिकारक है।

वर्ण व्यवस्था के कारण समाज में असमानता को बढ़ावा मिलता है। क्योंकि इसके अन्तर्गत व्यक्ति की भावनाओं एवं प्राथमिकताओं के लिए कोई स्थान नहीं है यह जन्म आधारित होने के कारण अपने पूर्वजों के धन्धों के अनुकरण पर ही बल देती है। वर्ण व्यवस्था ने ही जातिवाद को जन्म दिया है। डॉ. अम्बेडकर का मानना था कि सामाजिक चिन्तन के मूल

तत्व स्वतंत्रता, समता, भातृत्व, जनतंत्र आदि है जिनमें मानवीय गौरव की ध्वनि गूंजती है। ये बौद्धिक प्रेरणा और मानव सेवा के स्त्रोत है। इन्हीं के आधार पर उन्होंने भारत में एक नवीन समाज व्यवस्था की बात कही, जो वर्ण, जाति और अस्पृश्यता से भिन्न, मानववादी मूल्यों को श्रेष्ठ मानती है। डॉ. अम्बेडकर समता के सिद्धान्त को वैचारिक एवं व्यावहारिक दोनों रूपों में महत्व देते थे।

राजनैतिक समता स्थापित करने के उद्देश्य से डॉ. अम्बेडकर ने कहा कि चुनाव हमेशा योग्यता के आधार पर ही होना चाहिए अन्यथा सामाजिक प्रजातंत्र एवं मानवाद के प्रति घोर अन्याय होगा। यदि वैयक्तिक प्रयत्नों में हम व्यक्तियों को असमान समझे, तो कम से सामाजिक सुविधाओं के क्षेत्र में उन्हें समान समझना चाहिए। दलितो की स्थिति को सुधारने एवं समाज के अन्य वर्णों के समकक्ष स्थिति तक लाने के लिए उन्हें विशिष्टता की स्थिति प्रदान करनी होगी तभी वास्तविक 'समता' की समाज में स्थापना हो सकेगी।

समानता का अर्थ ही 'एक निश्चित लक्ष्य में एक जैसा' अथवा 'एक समान होने की स्थति' होता है। अर्थात समाज द्वारा वांछित व्यवस्था जिसमें प्रत्येक नागरिक को समाज के संचालन में समान प्रतिनिधित्व प्रदान किया जाता है। डॉ. अम्बेडकर का कहना था 'मैं किसी समुदाय की प्रगति महिलाओं ने जो प्रगति हासिल की है उससे मापता हूँ।'

बौद्ध विचाराधारा के अनुसार - 'अस्पृश्यता एवं दलितों का सामाजिक आर्थिक शोषण धर्मशास्त्र द्वारा चलाये गए सिद्धांतों का परिणाम है।' इसलिए जब तक शास्त्र सम्मत वर्णाश्रम, कर्म एवं पुर्नजन्म पर आधारित परम्परागत विचारधारा का अन्त नहीं किया जाता तब तक दलित जातियों के व्यक्ति शिक्षा एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में कितनी ही प्रगति क्यों न कर ले उनको समाज में उन्नत और सामाजिक दर्जा नहीं मिल सकेगा।

डॉ. अम्बेडकर ने अपने प्रयासों को कानून के माध्यम से पूर्ण करने का प्रयास किया। भारत के प्रथम कानून मंत्री के रूप में उन्होंने दलितों की स्थिति को सुधारने के लिए अनेक कानूनी प्रयास किए ताकि समाज में विद्यमान असमता को समाप्त किया जा सके और सही अर्थो में राजनैतिक एवं सामाजिक समता की स्थापना भारत में हो सके।

प्रस्तावित शोध कार्य के उद्देश्य (Objects of the proposed study)

प्रस्तावित शोध कार्य में आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन के अन्तर्गत समानता की अवधारणा का विश्लेषण किया जायेगा, जैसा कि प्रस्तावित शोध कार्य के परिचय में इसे स्पष्ट किया है। विशेष रूप अथवा सदंर्भ में - गांधी एवं अम्बेडकर दृष्टि का भी अध्ययन एवं विश्लेषण होगा। अतः शोध कार्य के निम्नांकित उद्देश्य होगे :-

1. भारतीय राजनीतिक चिन्तन एवं समानता की विचार धारा का आधुनिक परिपेक्ष्य में अध्ययन एवं विश्लेषण करना।
2. समानता के सिद्धान्त के अन्तर्गत ही गांधी दृष्टि का अध्ययन एवं विश्लेषण करना।
3. उपर्युक्त विवेचन के आधार पर ही गांधी एवं अम्बेडकर दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन एवं समानता के सिद्धान्त के साथ परीक्षण करना।
4. वर्तमान संदर्भ में ही दलितों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन एवं विश्लेषण एवं सुधार के लिये सुझाव देना।

शोध का महत्व (Importance of Research)

भारतीय संविधानिक व्यवस्था के अनुसार-समानता व्यक्ति का अधिकार है। समानता की व्यवस्था के आधार पर ही मानव कल्याण सम्भव है। अतः समाज के संतुलित एवं बहुआयामी विकास के लिये भी सामाजिक समता आवश्यक है। समता के अभाव में समाज में भय, असंतोष एवं वर्ग संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है। अतः कल्याणकारी राज्य की विचारधारा के अन्तर्गत 'सर्वे भवन्तु सुखिन, सर्वे संतु विरामया' के कथन का परीक्षण किया गया है तथा वर्तमान परिपेक्ष में भी 'वसुधेव कुटुम्बकम' के विचार को यदि सार्थक करना है तो सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक, समता को महत्व पूर्ण स्थान देना होगा।

शोधकर्ता का यह विषय वास्तव में महत्वपूर्ण है क्योंकि शोध की परिकल्पना में भी यह उल्लेख है कि गांधी एवं अम्बेडकर दृष्टि के आधार पर तुलनात्मक एवं परीक्षणात्मक विश्लेषण किया जाकर समानता के सिद्धान्त को वास्तव में फलीभूत किया जा सकता है।

APPENDIX-II

साहित्य की समीक्षा (Review of the Literature)

शोध कार्य की प्रस्तावना उद्देश्य एवं आयामों को ध्यान में रखकर वर्तमान में उपलब्ध निम्नांकित पुस्तकों, आलेखो, संदर्भो का अध्ययन किया गया जिनका उल्लेख इस प्रकार है :-

1. प्रकाश नारायण नाटाणी ने अपनी पुस्तक 'आधुनिक भारत के राजनीतिक विचारक' में राजाराम मोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, गोपालकृष्ण गौखले, एनीबीसेन्ट, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, विपिनचन्द्र पाल, सर सैयद अहमद खाँ, महात्मा गांधी, भीमराव अम्बेडकर आदि के राजनैतिक विचारों की सारपूर्ण विवेचना करते हुए बताया गया है कि किस प्रकार इन देश प्रमुख विचारकों ने अपने विचारों के माध्यम से समानता की दिशा में प्रयास किए।

2. डॉ. अमरेश्वर, अवस्थी एवं डॉ. राम कुमार अवस्थी ने अपनी पुस्तक 'आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन' में बताया है कि भारत पर पाश्चात्य सम्पर्क के प्रभाव हानि कारक भी पड़े और लाभप्रद भी। ये प्रभाव देश` सामाजिक एवं आर्थिक, राजनैतिक एवं शैक्षणिक सभी क्षेत्रों में पड़े। स्वभावतः चिन्तन का सम्भवतः कोई भी क्षेत्र अछूता न बचा। आधुनिक भारत के जितने भी विचारक एवं विद्वान हुए वे किसी ने किसी रूप से पश्चिमी चिन्तन से प्रभावित हुए। उन्होंने पश्चिम का अन्धानुकरण नहीं किया, लेकिन पश्चिम की अच्छाईयों की उपेक्षा भी नहीं की। प्रारंभिक काल में पाश्चात्य सम्पर्क का प्रभाव अधिक हानिकारक सिद्ध हुआ, किन्तु आगे चलकर मानसिक क्षितिज के विस्तार के साथ-साथ परिस्थितियाँ बदली और भारतीयों में एक या दृष्टिकोण विकसित हुआ।

3. डॉ. पुरूषोत्तम नागर ने अपनी पुस्तक 'आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनैतिक चिन्तन' में बताया है कि भारतीय राजनैतिक चिन्तन मूलतः भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम एवं तज्जनित नवचेतना का सुफल है। एक और आधुनिक युग की सामाजिक एवं

राजनैतिक विश्वव्यापी मान्यताओं को पाश्चात्य संसर्ग के कारण आत्मसात करने वाले भारतीय मनीषी-चिन्तको ने भारतीय परिवेश में उन्हें यथा शक्ति साकार करने का प्रयत्न किया है तो दूसरी और परम्परारूढ चिन्तको ने भारतीय परिवेश में व्याप्त सामाजिक राजनैतिक तथा अन्य प्रकार के विचार-बिन्दुओं का अवलम्बन लेकर चिन्तन के अविरल प्रवाह को बनाए रखा है। आधुनिक समय में भारतीय चिन्तन की मौलिकता स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, श्री अम्बेडकर आदि के विचारों में मुखरित हुई है।

4. ओमप्रकाश गाबा ने अपनी पुस्तक 'राजनीति विचारक विश्वकोश' के अन्तर्गत यह बताया है कि पुराने राजनीति सिद्धान्तकारों का मुख्य सरोकार अपने-अपने समय की राजनीतिक से था, परन्तु उनके चिन्तन के अन्तर्गत मनुष्य और समाज के बारे में चिन्तन सत्य की अभिव्यक्ति हुई है। उसमें ऐसी समस्याएं उठाई गई है जो देशकाल की सीमाओं से परे है - जो देश-देशान्तर और युग-युगान्तर के लिए पर्याप्त प्रासंगिक है। ऐसा चिन्तन ऐतिहासिक परिस्थितियों की उपज है।

5. डॉ. देशबन्धु त्यागी ने अपनी पुस्तक 'आधुनिक भारत का राजनैतिक इतिहास' में बताया है कि वर्तमान भारतीय परिवेश में संभवतः गंभीरतम चुनौती साम्प्रदायिक वैमनस्य है जिसकी जड़े आंशिक रूप से द्वेषपूर्ण धार्मिक/पंथिक मानसिकता एवं निर्णायक रूप में साम्राज्यवादी राजनैतिक शैली में अन्तर्निहित मानी जा सकती है। समसामयिक संदर्भ में, समस्या के वस्तुगत विश्लेषण एवं यथोचित निराकरण के लिए ऐतिहासिक तथ्यों की संतुलित प्रस्तुति आवश्यक है।

6. विपिनचन्द्र ने 'आधुनिक भारत का इतिहास' में बताया है कि पुरातन साम्राज्यवाद और राष्ट्रवाद के इतिहास लेखन की चुनौती के साथ पुस्तक ऐतिहासिक-राजनैतिक वर्णन से आगे बढ़कर इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और अन्य संबंधित विषयों के पारम्परिक अन्तर संबंधों पर ध्यान केन्द्रित करती है। पुस्तक में व्यापक सामाजिक बलो,

आंदोलनो, संस्थाओं और व्यक्तियों का अध्ययन इस उद्देश्य के साथ किया गया है कि कुछ घटनाए क्यों घटित हुई और इस तरह की घटनाओं के परिणाम क्या हुए।

7. डॉ. वी.पी. शर्मा ने 'आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन' में बताया है कि आधुनिक एशिया का प्रबुद्धीकरण, उसमें नवजीवन का संचार तथा उसका द्रुत पुनरूत्थान पिछले सवा सौ वर्षों के विश्व इतिहास की अध्याधिक महत्वपूर्ण घटना है। भारत का बौद्धिक पुनर्जागरण आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद के उदय का एक महत्वपूर्ण कारण था। जिस प्रकार इटली के पुनर्जागरण तथा जर्मनी के धर्म सुधार आन्दोलन ने यूरोपीय राष्ट्रवाद के उदय के लिए बौद्धिक आधार का काम किया था, उसी प्रकार भारत के सुधारकों तथा नेताओं के उपदेशों ने देशवासियों में स्वायत्त तथा आत्मनिर्णय पर आधारित राजनैतिक जीवन का निर्माण करने की इच्छा उत्पन्न की। भारतीय आत्मा के जागरण की सजृनात्मक अभिव्यक्ति सर्वप्रथम दर्शन, धर्म और संस्कृति के क्षेत्रों में हुई और राजनैतिक आत्म-चेतना का उदय उसके अपरिहार्य परिणाम के रूप में हुआ।

8. ज्योति अरूण की पुस्तक 'मानववाद गांधी एवंम सात्र' समसामयिक परिदृश्य की जटिल समस्याओं से सम्बद्ध विकल्पों के विश्लेषण का एक श्लाघनीय प्रयास है, विशेष कर इसलिए इसमें वर्तमान विश्व पूर्व एवम् पश्चिम की मूल समस्याए विमान वीयकरण की प्रवृति से जनित है। इनका निराकरण भी समग्र मानववादी चिन्तन एवं प्रतिबद्ध कर्म में ही अन्तर्निहित है।

उपर्युक्त संदर्भो, पुस्तको एवं आलेखो का अध्ययन एवं साहित्य की समीक्षा कर शोध कार्य की प्रस्तावना विषय का महत्व एवं शोध परिकल्पना तय की गई है।

APPENDIX-III

शोध अन्तराल (Research Gap) -

शोधकर्ता द्वारा शोध शीर्षक के अनुसार विभिन्न पुस्तको, सन्दर्भो व आलेखों का अध्ययन किया गया तथा इन्टरनेट पर उपलब्ध साहित्य का अध्ययन भी किया गया।

शोध उद्देश्य एवं परिकल्पना के आधार पर साहित्य अध्ययन से ज्ञात होता है कि इन ग्रन्थों एवं संदर्भो में सम्पूर्ण अध्ययन विवरणात्मक (Descriptive) है। शोध कर्ता अपनी परिकल्पना (Hypothesis) के आधार पर चाहता है कि इस उपलब्ध साहित्य का विभिन्न आयामों पर शोध उद्देश्य के आधार पर तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विवेचन प्रस्तुत किया जाय ताकि शोध का उद्देश्य पूर्ण हो सके।

मुख्य परिकल्पना (Major Hypothesis) -

शोध उद्देश्य साहित्य समीक्षा के आधार पर शोध कार्य की निम्नांकित परिपल्पना तय ही है ताकि शोध उद्देश्यों की पूर्ति हो सके –

1. भारत में सार्थक राजनीतिक एवं आर्थिक समता अर्जित करने के लिए प्रभावी सामाजिक समता पूर्व शर्त है।

शोध पद्धति (Research Methodology) -

प्रस्तावित शोध 'आधुनिक भारतीय चिन्तन में समानता की अवधारणा : गांधी दृष्टि एवं दलित चिन्तन का तुलनात्मक अध्ययन' विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। जिसमें ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक संदर्भ में निष्कर्ष निकाले जायेगें। इस कार्य को सम्पादित करने के लिए द्वितीयक आंकडों का समावेश किया जायेगा। जिसमें अध्ययन सम्बन्धित साहित्य, शोध पत्र, आलेखों इत्यादि के माध्यम से किया जायेगा।

शोध अध्याय (Chaptrisation) -

1. **परिचयात्मक**
   - 1.1 शोध समस्या का परिचय
   - 1.2 शोध का महत्व
   - 1.3 शोध के उद्देश्य
   - 1.4 पूर्व साहित्य का अवलोकन
   - 1.5 पूर्व कल्पना
   - 1.6 शोध पद्धति
2. **भारतीय चिन्तन में समता की अवधारणा : ऐतिहासिक अनुशीलन**
   - 2.1 ऋग्वेदिक काल, उपनिषेद काल
   - 2.2 बौद्ध जैन परम्परा
   - 2.3 भक्ति आन्दोलन

3. **आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन में समता की अवधारणा का विकास**

   3.1 उपनिवेशवाद के साथ द्वन्द

   3.2 राजाराम मोहन राय

   3.3 स्वामी दयानन्द सरस्वती

   3.4 स्वामी विवेकानन्द

   3.5 ज्योतिबा फुले

   3.6 दादाभाई नौरोजी

4. **गांधी दृष्टि में समता की अवधारणा**

   4.1 समता का अर्थ

   4.2 सामाजिक समता

   4.3 आर्थिक समता

   4.4 राजनैतिक समता

   4.5 कानूनी समता

   4.6 लैगिक समता

5. **अम्बेडकर दृष्टि में समता की अवधारणा**

   5.1 समता का अर्थ

   5.2 सामाजिक समता

   5.3 आर्थिक समता

   5.4 राजनैतिक समता

   5.5 कानूनी समता

   5.6 लैगिक समता

6. **तुलनात्मक विश्लेषण**

7. **निष्कर्ष**